लाल ड्रेस सुनहरे जूते

मानव मन की संवेदनाएं किसी विशेष देश या सरहदों से भिन्न नहीं हो जातीं। भारतीय परिवेष या अमेरिकन वातावरण भावनाओं को बॉटता नहीं। किसी के भी व्यक्तित्व पर सुख दुख सामान्य रूप से हावी होते हैं। ये अमेरिका में रहती एक नारी की कहानी है।

बैटन रूश के जनरल अस्पताल में प्रौढ़ सैक्शन के बाहर लॉन में ढेरों बुजुर्ग कुर्सियों पर बैठे आज इतवार को अपने सगे सबंधियों की बाट जोह रहे हैं। कुछ बातों में मशगूल हैं . तो कई चुप्पी साधे बैठे हैं। किसी बुजुर्ग के होंठ कुछ बुदबुदा रहे हैं . तो किसी की गर्दन नींद से बोझिल ऑखे लिए . कमान सी टेढ़ी हो रही है। तभी एक युवा पुरूष . सजीला जवान पच्चीस की उम्र रही होगी. . . भीतर की ओर आया। बुजुर्ग मिसेस होम्स उसे हैरी. हैरी. पुकारती हुई उसकी ओर लपकीं। शेष बुजुर्ग भी एकदम सजग हो. उसे देख प्रसन्न हो उठे। मानो ममत्व की संवेदना सबके भीतर एक साथ जाग उठी हो। अमेरिका के बुजुर्ग भली भांति समझते हैं कि उनके देश में जीवन की तेज रफ्तार ममत्व पर हावी हो चुकी है। स्वस्थ वृद्ध अपने ही घर में एकाकी जीवन बिताते हैं। अस्वस्थ होने पर उन्हें ओल्ड एज होम में रखते हैं। जहॉ उनको हम उम्र साथी मिल जाते हैं। डॉक्टर व नर्सें भी होते हैं . देखभाल के लिए। 'जितना गुड़ डालो उतना मीठा' यानि कि जहॉ अधिक पैसा लगता है. वहॉ पर बहुत अच्छी देखभाल भी होती है। जीवन के इस सत्य को वहॉ की संस्कृति का हिस्सा मान लिया गया है। अतएव क्षोभ के लिए वहॉ कोई स्थान नहीं है।

सो . मिसेस होम्स ने हर्ष विह्वल हो हैरी को अपने सीने से लगा लिया। उसे अपने साथ भीतर ले जाते हुए बोलीं. 'इस बार बहुत दिनों बाद आए हो बेटे क्या बात है?

हैरी– बहुत बार आना चाहा मॉ! लेकिन काम से निकल नहीं पाया।

मॉ– (सामने बैठकर) बेटा! केक खाएगा ? मैंने तेरे लिए बना कर रखा था। चाय लेगा या कॉफी ? देख न. मुँह कितना सूखा लग रहा है। खाना खाया है कि नहीं?

हैरी–(एकदम खीझकर) मॉ. ! खाना पीना छोड़ो। मेरे पास आकर बैठो। मैं तो तुम्हे देखने. मिलने. तुम्हारा हाल पूछने आया हूँ। देखो. मैं बिल्कुल भला चंगा हूँ।

मॉ– बेटा! मेरी तो ऑखें ही तरस गई हैं तेरी राह देख– देखकर। तेरे पिता जब ज़िंदा थे (सॉस भरकर) हम सब अपने घर में साथ–न साथ थे। घर में कितनी रौनक थी . ...

हैरी– मॉ ! मैं अब काम करने लग गया हूं। फिर से अपना घर होगा। (मॉ को प्यार करते हुए) बस तुम ठीक हो जाओ।

मॉ– तूं कितना कमा लेता है मेरे बच्चे ? अब शादी कर ले। मुझे पोते का मुँह तो दिखा दे। (रूआंसी होकर) मैं बूढ़ी हो गई हूं। दवाइयॉ खाते ही चक्कर आ जाते हैं। फिर..... फिर बाद में ठीक भी लगता है।

हैरी – (चिंतित होकर) मॉ ! अपनी दवाई दिखाना। कहीं तुम नींद की गोलियॉ तो नहीं खाती ? कितनी बार तुमसे कहा है कि डॉक्टर को कहना तुम्हारा इलाज करे . तुम्हे नींद की दवाई देकर सुलाए न रखे।

मॉ – नहीं . नहीं हैरी! बाद में सब ठीक लगता है। डॉक्टर ठीक है।

हैरी – (मॉ को प्यार से कंधों से पकड़कर) मॉ ! मैं कुछ ही दिनों में तुम्हे एक टेलीविज़न सैट का तोहफा यहॉ भिजवा रहा हूँ। फिर तुम्हारा मन लगा रहेगा।

मॉ – यह तो बहुत अच्छा किया मेरे लाल ! (धीरे से) पर मुझे जल्दी जल्दी मिलने आया करना। कोई लड़की भी देख ले अपने लिए। घर बसा ले मेरे बच्चे !

हैरी – (नज़र चुराते हुए) मॉ! इस बार मैं जल्दी आऊंगा। 'मरियम'... वो जो मेरे साथ ड्रामें में काम करती थी न याद है तुम्हे ? बस उसी से शादी करने का पक्का इरादा किया है।

मॉ – (खुशी से भरकर) अच्छा है। बस तेरा घर बस जाए। मरियम के लिए लाल ड्रेस व सुनहरे जूते अवश्य लाना। वो उनमें तेरे साथ बहुत सुन्दर लगेगी। (ख्यालों में खोकर) ...मैं भी तेरे पिता के साथ लाल ड्रेस व सुनहरे जूते पहनकर स्टेज शो में गई थी। सभी कहते थे 'रूबी होम्स को तो सौन्दर्य प्रतियोगिता में भाग लेना चाहिए।' (उत्साह से खड़े होकर) देख न. हैरी! मैं दस किलो वजन घटा चुकी हूँ। अब मुझे मेरी लाल ड्रेस ज़रूर पूरी आ जाएगी।

मॉ को इतना उत्साहित देखकर हैरी को मॉ पर बहुत प्यार आया। साथ ही उसकी बीमार हालत देखकर तरस भी आया। उसने बहुत प्यार से मॉ को पकड़कर उसे पलंग पर लेजाकर लिटाया। और अपनी ऑखों की कोर से बहते पानी को चुपके से पोंछा।

हैरी – अब तुम सो जाओ मॉ। तुम प्रतियोगिता में अवश्य हिस्सा लेना। बस तुम ठीक हो जाओ ।

(हैरी की बॉह पकड़ते हुए)

मॉ – बेटा! मैं ठीक हो जाऊंगी। तूं जल्दी आना। मुझे ले चलेगा न प्रतियोगिता में? मुझसे पक्का वायदा कर।

हैरी ने मॉ से वायदा कर उसे चादर ओढ़ा दी। वह भरे हुए मन से बाहर निकल गया। अपनी मजबूरी पर और मॉ की दयनीय दशा. . . . दोनों पर ही उसका मन व ऑखें रो रही थीं। हैरी स्वंय नशे के इन्जैक्शन लेता था। रहने के लिए उसके पास किसी रेस्तरां के छत की बरसाती मात्र थी। वह जो भी कमाता था. उससे उसका अपना गुजारा ही मुश्किल से हो पाता था। शादी के बंधन में बॅधने की तो वो सोच भी नहीं सकता था। मॉ को झूठे दिलासे दे देकर वो मॉ का दिल बहलाता रहता था। वापिस आकर उसने अपने दोस्त माइकल को मॉ की हालत बताई। हमेशा की तरह दोनों ने आदतन नशा किया और वहीं बरसाती में कबाड़ के ढेर पर पड़े रहे।

मॉ को एक हफ्ते में टेलीविज़न सैट मिल गया। वो खुशी से झूम सारे चैनल लगाती। फिर उनमें स्टेज शो ढूंढती। उसे फैशन शो में हिस्सा लेती प्रत्येक लड़की में अपनी छवि दिखाई देती। प्रत्येक प्रतिद्वन्द्वी की ड्रेस लाल व जूते सुनहरे प्रतीत होते। अपने कमरे में वह उनकी नकल करके चलती व उसी भॉति बोलने का प्रयत्न करती। जैसे. . . "अब आपके सामक्ष आज की सबसे हसीन और नम्बर वन रूबी होम्स पेश हो रही है।". . . . . .

शो समाप्त होने पर वह थक कर एक की जगह दो गोलियॉ खा लेती। उससे उसका सिर चकराता। उसे लगता सारा कमरा घूम रहा है। टी. वी . में जोर जोर से तालियां बज रही हैं। सब लोग खड़े होकर जोश में 'रूबी'. . 'रूबी नम्बर वन' . . . चिल्ला रहे हैं। ऊपर से फूल बरस रहे हैं। फिर उन सबके चेहरे कभी बड़े . कभी छोटे . कभी टेढ़े . कभी दॉत निकालकर भयानक से लगते हुए छत में लुप्त होते जा रहे हैं। सारे कमरे में चेहरे ही चेहरे देखकर मिसेस होम्स जोर– जोर से चीखने लग जातीं। उनकी चीखें सुनकर बाकि अन्य कमरों से लोग आ जाते। डॉक्टर को बुलाया जाता। नर्स आकर मिसेस होम्स को नींद का इंजैक्शन लगा जाती। शान्त खाली कमरे में टी . वी. की आवाज़ गूॅजती रह जाती।

मिसेस होम्स ने धीरे– धीरे बाहर अन्य बुजुर्गों में बैठना छोड़ दिया। वे अपने ख्यालों में ही सिमटकर रह गईं। सुबह उठते ही टी. वी. चालू करतीं. फैशन शो ढूंढने का जूनून उन पर सवार रहता। न मिलने पर चैनल बदल –बदल कर अन्त में थक जातीं। वो बहुत कमजोर हो चली थीं। उनके सोए हुए ख्वाब. . . . हकीकत का रूप पाने के लिए मचल उठे थे। दबी इच्छाएं जाग गई थीं। न वो कपड़े बदलतीं. न बाल सॅवारतीं। खुली हथेली पर एक दवाई की गोली रखतीं. . . तो लगता हाथ बहुत बड़ा हो गया है। एक गोली और. . . एक गोली और. . . हॉ . अब कुछ बात बनी। फिर वो ढेर सी गोलियॉ झट से खा लेतीं। मानो. कोई आकर मना कर देगा। इस तरह उनकी कमजोरी और लाचारी बढ़ती चली गई।

हैरी भी पुनः जल्दी मॉ के पास नहीं आ पाया। वह जब भी मॉ को याद करता. मायूसी के आलम में खो जाता। पैसे हाथ में आते ही वो शराब व नशे के इन्जैक्शन में खत्म कर देता। एक दिन माइकल ने हैरी की बाईं बाजू में ज़ख्म का नीला गड्ढा बना देखा। हैरी उसी ज़ख्म में फिर सुई चुभो रहा देखकर . . माइकल ने उसका हाथ रोका। वह उसे उसी वक्त जबरदस्ती डॉक्टर के पास ले गया। डॉक्टर ने बताया हैरी को गैगरिन हो गया है। फलस्वरूप हैरी की बाईं बॉह को कोहनी से काट दिया गया। हैरी अपनी लाचारी व बेज़ारी पर रोता रह गया। अब वह मॉ के समक्ष कभी भी नहीं जा पाएगा। उसे मॉ का ग़म सताने लगा. . . . .

उधर ,एक दिन मिसेस होम्स अपने कमरे से निकल . सब की ऑख बचाते हुए ओल्ड एज होम के गेट से बाहर सड़क पर निकल गई। राह में जिस किसी को देखतीं. उससे पूछतीं कि फैशन शो कहॉ हो रहा है। कहतीं कि उन्हें वहॉ समय पर पहुॅचना है . अभी तैयार होने ब्यूटी पार्लर भी जाना है। कृपया रास्ता बता दें। लोग अनदेखा करते। व पागल समझते। एक भलेमानस लड़की को तरस आया। वह बहुत प्यार से उनकी 'हॉ' में हॉ मिलाते हुए उन्हें पास के अस्पताल में ले गई। डॉक्टरों ने मिसेस होम्स को पागलपन

 ©Veena Vij

के बिजली के शॉक दिए। वहॉ बेहोशी में भी वे चिल्लाती रहीं . 'मेरा मेकअप करा दो...मुझे देर हो रही है। 'उसी बेहोशी में उन्हें चारों ओर से तालियों की गड़गड़ाहट सुनाई दे रही थी। व दिख रहा था कि वे स्टेज पर हैरी की बॉह पकड़कर लाल ड्रेस व सुनहरे जूते पहनकर शान से चलते हुए लोगों का धन्यवाद कर रही थीं। रंग बिरंगे गुब्बारे व चमकीली . सुनहरी पत्तियॉ हवा में उड़ रही थीं। रूबी नम्बर वन.....रूबी नम्बर वन की गूँज से हॉल गूँज उठा था। चारों ओर रोशनी ही रोशनी थी। उधर डॉक्टर की पकड़ मिसेस होम्स की बॉह पर ढीली पड़ती जा रही थी। मिसेस होम्स को अब दूर बहुत दूर स्टेज पर लाल ड्रेस पहने एक धुंधला सा आकार कुछ- कुछ दिखाई दे रहा था. जो और धूमिल होता जा रहा था.... जिसके पैरों में सुनहरे जूते थे।

वीणा विज 'उदित'

 ©Veena Vij